बच्चों का अख़बार

RNI No. UTTHIN/2003/10745 वर्ष 10, अंक 109, पृष्ठ 8, देहरादून, मार्च–अप्रैल, 2021 1995 से सतत प्रकाशित

दीदी की चिट्ठी

प्यारे बच्चों,

आशा करती हूँ तुम सब स्वस्थ और सुरक्षित हो। होली आ रही है और तुम दोस्तों का मन मचल रहा होगा होली के रंगों में रंगने का। बात गलत नहीं है लेकिन यदि होली के रंग प्राकृतिक हों, तो तुम भी और प्रकृति भी सुरक्षित है। कुछ को प्राकृतिक होली के रंग बनाना उनके स्कूल में वर्कशाप के माध्यम से मैंने बताया है और सिखाया भी है। वे तो स्वयं घर में बना सकते हैं। जिन्हें नहीं आता है वो प्राकृतिक रंग ही खरीदें। ध्यान रहे अभी कोरोना गया नहीं है। इसलिए सुरक्षित होली खेलें।

इस अंक में गंगा माँ बता रही हैं कि किस तरह प्लास्टिक धरती व हवा को नुकसान पहुंचा रहा है। 'समय बैंक' (Time bank) क्या है? क्यों इसकी आवश्यकता पड़ी यह भी जानें। बच्चे कुछ कर के जब सीखते हैं तो वह उनके मानस पटल में हमेशा के लिए छप जाता है। मिट्टी को तैयार करना, बीज बोना, बीज का अंकुरित होना, फूल व फलों का लगना, खाद बनाकर डालना, पानी देना, निराई करना और फिर तुड़ाई। यह सब रोमांचक तो है। साथ ही प्रकृति के करीब रहकर बच्चा बहुत कुछ सीखता है। वह जिम्मेदारी निभाना, देखभाल करना और प्रकृति का सम्मान करना सीखता है। शायद सैद्धांतिक शिक्षा के बोझ तले हम यह सब नजरअंदाज कर रहे हैं। माता-पिता व शिक्षकों से विनम्र निवेदन है कि बच्चों में इस प्रतिभा को बढ़ावा अवश्य दें व उन्हें प्रोत्साहित जरूर करें।

हमारे गंगा प्रहरी कोरोना काल में हमारे और अपने इलाके के बच्चों के बीच मजबूत कड़ी बनें और बच्चों तक अखबार पहुंचाया उन्होंने बच्चों की प्रतिक्रियाएं भी हम तक पहुंचाईं। उन सभी के प्रयासों को तहे दिल से धन्यवाद। बच्चों द्वारा रचित कविता व चुटकुले भी हैं। तुम सब पाठकों के पत्रों से मेरा हौसला बुलंद हो जाता है।

होली की ढेर सारी शुभकामनाएं।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

स्वास्थ्य

वैक्सीन क्यों जरूरी है?

जन्म से हम लगातार कई तरह के वायरस, बैक्टीरिया और अन्य रोगाणुओं के संपर्क में आते रहते हैं। इनमें से कुछ बिमारी का कारण बन

शेष पृष्ठ सं. 2 में.....

हिमालयी, बच्चों का अखबार

ऐसा भी होता है !

क्या है "समय बैंक" (Time Bank) ?

समय बैंक सामाजिक सुरक्षा के स्विस संघीय मंत्रालय द्वारा विकसित एक वृद्धावस्था पेंशन कार्यक्रम है। अब तक हम यह जानते थे कि बैंक में पैसों का लेन देन होता है। वहां हम अपनी जमापूंजी रखकर निश्चिन्त हो जाते हैं। परेशानी के समय यही पूंजी हमारा सहारा बनती है। लेकिन एक ऐसा बैंक भी है जहां हम अपना समय जमा करते हैं और जरूरत के समय जितना समय जमा है उसके हिसाब से आपको बैंक द्वारा मदद दी जायेगी।

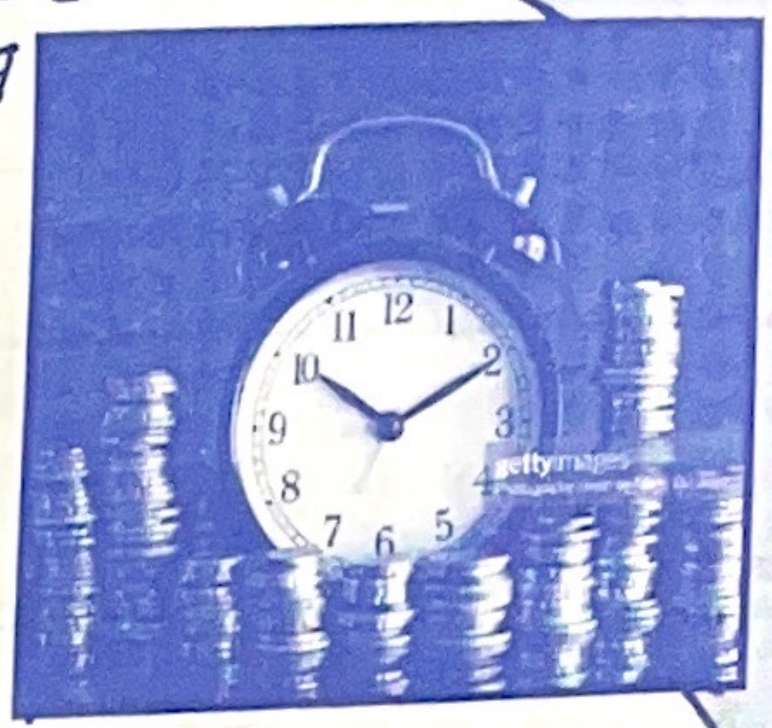

इस बैंक में स्वेच्छा से कोई भी अपना समय जमा करवा सकता है। कैसे? यदि कोई व्यक्ति सक्षम है तो वह हर दिन कुछ घण्टे किसी अकेले, लाचार बुजुर्ग के यहां अपनी तरफ से सहायता देता है। जितने घण्टे वह मदद देता है वह समय बैंक में जमा होता रहता है। समय बैंक की शर्त होती है कि जमाकर्ता स्वस्थ हो, बोलने में अच्छा हो और साथ में मिलनसार भी हो। हर रोज उनके service hours उनके व्यक्तिगत खाते में जमा होते रहेंगे। जैसे कई लोग सप्ताह में २ बार जाते हैं। और २ घंटे व्यतीत करते हैं। वे जैसे बुजुर्गों के लिए खरीदारी करते हैं, उनका कमरा ठीक ठाक करते हैं, उन्हें सनबाथ के लिए ले जाते हैं, उन्हें कार में घुमाते हैं, डॉक्टर के पास ले जाते हैं, उनसे बातें करते हैं आदि। एक साल ऐसा करने के बाद "समय बैंक" उन्हें "समय बैंक कार्ड" देता है। जब समय बैंक से मदद की जरूरत होती है तब जमाकर्ता अपने कार्ड के द्वारा समय बैंक से अपने लिए सहायता सूद समेत (time & time interest) मांग सकता है। यह मॉडल स्विट्ज़रलैंड ने शुरू किया है और काफी लोकप्रिय हो रहा है। देखा देखी U.K., फ्रांस भी अपना रहे हैं।

वैक्सीन क्यों जरूरी है ?

पृष्ठ सं. 1 का शेष भाग . . .

हमारे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली हमें संक्रमणों से बचाने में मदद करती है। जब हम संक्रमण के संपर्क में आते हैं, तो हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली रोगाणुओं को बेअसर करने के लिए और उनके हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला को ट्रिगर करती है। इस तरह संक्रामक रोगों के संपर्क में आने से हमें सुरक्षा मिलती है। और हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली रोगाणु को दूर करती है।

पर कभी-कभी कुछ समस्याओं के कारण गंभीर जटिलताएं हो जाती हैं और हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली जीवाणुओं से लड़ने में हार जाती है। और इस कारण मृत्यु भी हो जाती है। टीकाकरण से रोग के प्रतिरक्षा को प्राप्त किया जाता है बिना कोई जोखिम उठाए।

वैक्सीन हमारे प्रतिरक्षा प्रणाली (immune system) को सक्रिय करता है ताकि हम बिमार ना पड़े और कई खतरनाक संक्रामक रोगों को इस सरल तरीके से रोका जा सकता है।

जब हम टीकाकरण करते हैं, तो हम प्रतिरक्षा प्रणाली के संस्मरण (memory) को सक्रिय करते हैं।

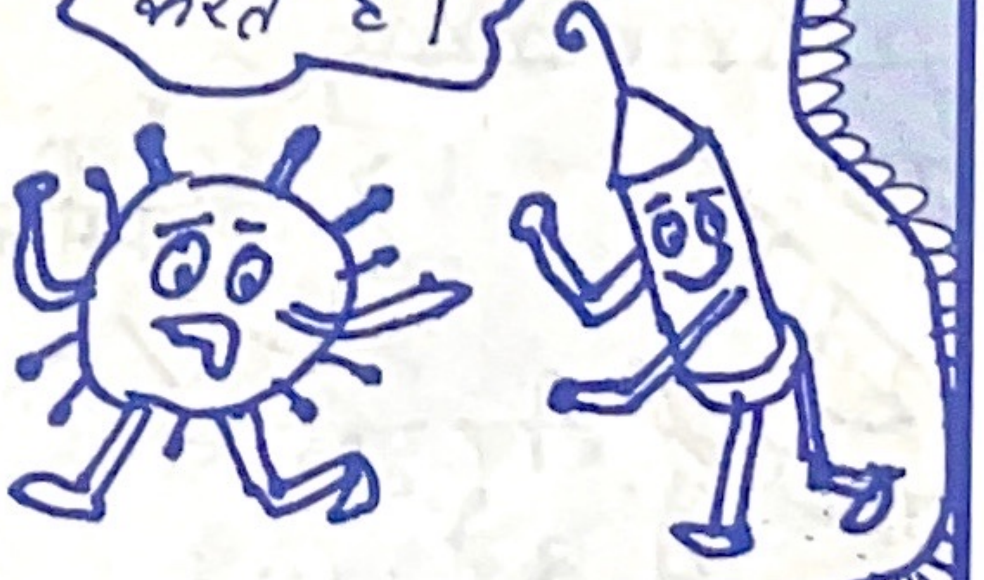

॥ नमामि गंगे ॥

गंगा प्लास्टिक और जैव विविधता (भाग-2)

पिछले अंक में मैंने (गंगा) तुम्हें बताया कि प्लास्टिक नदियों में कैसे पहुंच रहा है। और फिर वह जलीय जीवों पर क्या असर डाल रहा है। कुछ समय पहले मैंने (गंगा) 'मिशन पानी' गाना सुना। मेरी लहरें झूम उठी इसकी धुन व शब्दों पर। पता चला कि अपने प्रसून जोशी जी ने इसे लिखा है और रहमान जी ने संगीत दिया है। बच्चों ने जब इस गाने को गाया तो चार चांद ही लग गये। गाना कुछ इस तरह है ......

जल शिक्षा

मिशन पानी

सोचो तो क्यों है आज
सहमा सहमा पानी
यह चुप-चाप पानी क्यों
चलो बदल दें यह
कहानी कहानी
बचा लें निशानी हम
पूछेगी धरती
तब कहां थे तुम
नदी रो रही थी
तब कहां थे तुम
स्वच्छता और पानी
हमको बचानी है ये जिंदगानी

है कब से नाराज
गुस्सा गुस्सा पानी
यह क्यों उदास पानी क्यों
चलो बदल दें यह
कहानी कहानी
बचा लें निशानी हम
पूछेगी धरती
..... कहां थे तुम
स्वच्छता और पानी
हमको बचानी है ये जिंदगानी
ड्रिप ड्रैप
ड्रिप ड्रिप ड्रैप
ड्रिप ड्रैप
ड्रिपरी ड्रैप, ड्रिप ड्रैप ड्रिप ड्रिप ड्रैप
ड्रिप ड्रैप, ड्रिपरी ड्रैप
चलो बचा लें ये
धरोहर पुरानी
यह तेरा मेरा पानी चल
चलो बदल दें यह
कहानी कहानी
बचा लें निशानी हम।

धरती को प्लास्टिक से कैसे नुकसान पहुंच रहा है?

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (central pollution control board) की एक रिपोर्ट का कहना है कि भारत से हर दिन 26 हजार टन प्लास्टिक कूड़ा निकलता है। आधा कूड़ा (13 हजार टन) दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बैंगलूर से निकलता है। इस कूड़े में से सारा कूड़ा एकत्रित नहीं हो पाता है। अनुमानित 10 हजार 376 टन कूड़ा एकत्रित ना होने के कारण खुले मैदान में जहां तहां फैला रहता है। यही कूड़ा हवा से उड़कर खेतों, नालों और नदियों में जाता है। और नदियों से समुद्रों में।

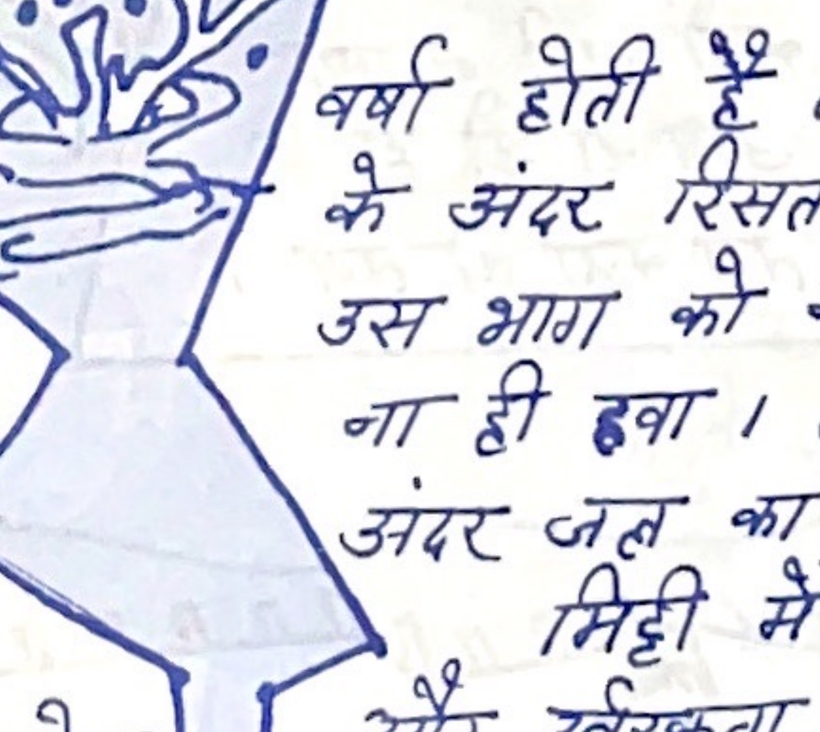

मैंने देखा है प्लास्टिक जो मैदानों और खेतों में ..लावारिस पड़ा था वह धीरे-धीरे जमीन के अंदर दबता रहता है। और जमीन में एक तह (लेयर) बना देता है। जब वर्षा होती है तो वर्षा का पानी धरती के अंदर रिसता नहीं है। धरती के उस भाग को ना जल मिलता है और ना ही हवा। इस तरह भूमि के अंदर जल का स्तर गिरने लगता है। मिट्टी में जो नमी रहती है और उर्वरकता भी खत्म होने लगती है। जो जल धरती के अंदर पहुंच रहा है उसमें माइक्रोप्लास्टिक के कण पाए गए हैं। जो भूमि की उर्वरकता को नुकसान पहुंचा रहे हैं। प्लास्टिक लंबे समय तक नहीं टूटता। कुछ समय बाद यह छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाता है।

हिमालयी, बच्चों का अखबार

इन टुकड़ों का आकार 5 मिलीमीटर या उससे छोटा होता है। फिर यही जल तुम मानव ट्यूबवैल (tubewell) या कुंए से निकालकर उपयोग में लाते हो। लो, अब आ गया प्लास्टिक तुम्हारे शरीर के अंदर नुकसान पहुंचाने।

प्लास्टिक हवा को कैसे नुकसान पहुंचा रहा है?

मैंने (गंगा) तुम्हें पिछले अंकों में बताया था कि आधिकांश प्लास्टिक पॉलीप्रोपाइलीन (polypropylene) से बना होता है। जो पेट्रोलियम या प्राकृतिक गैस से बना होता है। जब तुम मानव प्लास्टिक को जलाते हो – कभी चूल्हे की आग को शुरू करने के लिए, दुकान व घर के किनारे साफ-सफाई करने के लिए और ठण्ड से बचने के लिए व आग तापने के लिए। तो क्या होता है? प्लास्टिक को जलाने से हाइड्रोक्लोरिक एसीड, सल्फर, डाइऑक्साइड, डाइऑक्सिन, फ्यूरेन और भारी धातुओं जैसे खतरनाक रसायन, हवा में मिल जाते हैं। इस वजह से सांस संबंधी बीमारियां, चक्कर आना, और खांसी आती है। मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घटती है। डाइऑक्सिन के संपर्क से कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। यह गैसें ओजोन परत को भी क्षति पहुंचाती हैं। देखा! इस मोटे प्लास्टिक ने हवा की शुद्धता को भी दूषित कर दिया है।

देखा तुमने, यह प्लास्टिक किस तरह नदी, जलीय जीव, भूमि व हवा को नुकसान पहुंचा रहा है। और हॉं, एक बात ओर यह प्लास्टिक पानी को भी दूषित कर रहा है। मैं तो कहूंगी – है कब से नाराज मैं

गुस्सा गुस्सा गंगा
यह क्यों उदास मैं, गंगा
चलो बदल दो मेरा प्रदूषण
बचा लो मुझे, मैं हूं
तुम्हारी मॉं
मैं चली गई तो
पूछेगी नई पीढ़ी
क्यों नहीं बचाया
अब रो रहे हो
तब कहां थे तुम।

मैं तो कवयित्री बन गई। ही! ही! ही! ध्यान रखना। प्लास्टिक को यहां वहां मत फेंकना। अपनी नदी, तालाब, जल, भूमि, वायु को प्लास्टिक मुक्त रखना।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

गंगा G.K.

① गंगा नदी को बांग्लादेश में किस नाम से पुकारते हैं?

② विश्व की सबसे अधिक विख्याती नदी किसे कहते हैं और कहां है?

③ जिस दिन गंगा धरती पर आई थी उस दिन को किस रूप में मनाया जाता है?

उत्तर ② हुगली, पश्चिम बंगाल
① पद्मा
③ गंगा दशहरा

॥ नमामि गंगे ॥

गंगा प्रहरी हमारे अनुभव

① विद्यालयों में बच्चों का अखबार के विषय में हमें हमेशा मांग करते रहते हैं। और अपने हाथों से लिखे कहानी, कविता, चुटकुला देखते हैं तो उनका मन बहुत उत्सुक होता है कि हमें अगली बार हमारा लिखा हुआ अखबार में आयेगा।

② जब मैं बच्चों के बीच में जाते हैं तो बच्चो के अखबार के विषयों में जानकारी हमसे साझा करते हैं तो बहुत अच्छा लगता है।

③ बच्चो का अखबार में बहुत सी नई-नई जानकारी इसके माध्यम से मिलती रहती है।

⊛ नागेन्द्र निषाद
गंगा प्रहरी
बनारस

बच्चो को अखबार देते समय एक जागरूक नागरिक की तरह बच्चों के साथ ज्ञान का आदान प्रदान से कुछ विषयो का भी ज्ञान बढ़े है।

⊛ दर्शन निषाद
गंगा प्रहरी
सूजाबाद, बनारस

बच्चों के अखबार आने से बाल गंगा प्रहरी भी जागरूक हो गये हैं।
स्वच्छता का पाठशाला, और जलीय जीव संस्थान का भी ज्ञान मिला है। ⊛ जितेन्द्र निषाद
गंगा प्रहरी
गंगा ग्राम कुण्डा खुर्द

20/01/2021

① मैंने देखा बच्चे बहुत उत्साहित रहें।
② अखबार को बच्चों ने बहुत पसंद किया।
③ बच्चे पूछने लगे कहां से आया अखबार?
④ अखबार लेते समय बे बहुत खुश थे।

⊛ प्रवीण निषाद
गंगा प्रहरी
ग्राम सरसौल

⊛ मैंने नरौरा के कई स्कूलों में "बच्चों का अखबार" दिये। मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा। बच्चे बहुत खुश थे अखबार पाकर।

⊛ शिक्षक व माता पिता भी बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे थे।

⊛ बच्चे सुधा दीदी को बहुत याद कर रहे थे और उनका कहना था उन्हें फिर से बुलाये। मैंने देखा बच्चे उन्हें बहुत प्यार करते हैं।

⊛ लॉकडाउन के समय मैंने कई गाँवो में बच्चो को यह पत्रिका दी।

⊛ मेरा भी ज्ञान बढ़ा। मैं भी कई चीजें पढ़कर बच्चों को बताता था। मेरे साथ कृष्णा मेरी सहयोगी भी मेरे साथ रही।

⊛ निशान्त, गंगा प्रहरी
नरौरा

राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार की ग्रामीण योजनाओं को भी बच्चो के साथ चर्चा करें जैसे
① सुकन्या समृद्धि योजना
② प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना
③ शिक्षा का अधिकार अधिनियम

⊛ मंशा देवी
गंगा प्रहरी, सूजाबाद
बनारस

आपके द्वारा भेजी गयी "बच्चों के अखबार" की प्रतियाँ मैं बच्चो के विद्यालयों में जाकर स्वयं बच्चों में वितरित कर देता हूँ। बच्चे खुश हो जाते हैं और पढ़ने का प्रयास करते हैं। निःसन्देह आपका यह अभियान स्तुत्य है। ⊛ श्री कैलाश त्रिपाठी, शिव कुटी, औरैया, उ०प्र.

बच्चों के दिल से ....

मेरी प्यारी सुधा दीदी

- बच्चों का अखबार से हमें कई नई-नई चीजों का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- बच्चों के अखबार ने हमें बताया की हम कोरोना से कैसे बचाव करे।
- बच्चों के अखबार ने हमें बताया कि हमें रोग प्रतिरोधक शक्ति (immunity) बढ़ाने वाले पदार्थों का सेवन करना चाहिए।
- सुधा दीदी हमने कोरोना काल में कोरोना से बचने के सभी नियमों का पालन किया।
- सुधा दीदी आपने हमें होली पर प्राकृतिक रंगों से खेलने व बनाने की शिक्षा दी।
- आपने हमें डॉलफिन, कछुआ, मेढ़क, सांप आदि जीवों के रक्षा के बारे मे बताया। इनकी वजह से गंगा जी स्वच्छ व प्रदूषण रहित होगी।

✪ सौरभ वार्ष्णेय, कक्षा-10 'क', मा.श्री.जी.द.जी.उ.मा.स.वि. नरौरा, उ.प्र.

हमें सुधा दीदी ने बताया कि हमें त्यौहार प्राकृतिक ढंग से मनाना चाहिए। हमें गंगा में गंदगी नहीं करनी चाहिए। निशान्त भैया ने भी कोरोना से बचाव करने के बारे में बताया। कृष्णा दीदी ने हमें कछुआ के बारे मे बताया। बच्चों को नशे की आदत बड़ों से लगती है। मुझे बच्चों के अखबार से प्रेरणा मिली है। सुधा दीदी जी आपकी बहुत याद आ रही है। कृप्या कर हमारे स्कूल मे आने की कृपा व कष्ट करें। Please, Please, Please

✪ प्रिन्स शर्मा, कक्षा-8, ग्राम - नगला बहादुर सरस्वती विद्या मन्दिर, नरौरा

12/01/2021

कोरोना के बारे में इस अखबार में सुधा दीदी ने बहुत अच्छा लिखा है। सुधा दीदी ने जो हमारे लिए अखबार दिया है उससे हमें बहुत लाभ हुआ है। दीदी की मैं कैसे शुक्रिया करू कि उन्होंने हमें गंगा को सुरक्षित रखने, प्राकृतिक कलर, अखबार देकर हम सभी बच्चों को ज्ञान दिया। हमारी सुधा दीदी ने हमको इतनी प्रेरणा दी। मैं चाहती हूँ कि वह स्कूल में आकर समय-समय पर प्रेरणा देती रहें ऐसी मेरी आशा है। हमारी प्रिय सुधा दीदी।

✪ पल्लवी यादव
कक्षा दशम (क)
गाँव सिलघरी
सरस्वती विद्या मन्दिर, नरौरा

बच्चों के अखबार ने बच्चों को काफी ज्ञान दिया है। बहुत से बच्चे बचपन से ही नशा करने लगते हैं। इससे उनको हानि होती है। बच्चों का अखबार बहुत ही बच्चों को आगे बढ़ाना का तरीका है। इससे बच्चों को गंगा की सफाई के बारे में जानकारी होती है। इससे बच्चों को ही नहीं अपितु बड़े लोगों को जानकारी की सीख प्राप्त की। हमारी सुधा दीदी बहुत अच्छी हैं। जय हिन्द जय भारत।

21/01/21 ✪ विनीत पाली, कक्षा-9 'A', सरस्वती मन्दिर, बु.शहर

सुधा दीदी अपने विचार में समझाते हैं।

According to Pandit Jawahar Lal Nehru "The Ganga is a symbol of India's cultural and civilization." 21/01/2021

The Ganga is a real God.

बच्चों का अखबार
Newspaper of children

Thanks for Wildlife Institute of India.
Thanks for Sudha Didi

✪ रविराजपूत, कक्षा दशम
गाँव कर्मवर्म, नरौरा
सरस्वती विद्या मन्दिर

साक्षात्कार

"कर के सीखने" का सिद्धान्त

प्रकृति के करीब रहें

आपने लॉकडाउन के समय अपना समय कैसे व्यतीत किया?

मेरा घर स्कूल के पास है। स्कूल बंद थे। स्कूल में "बच्चों का संसार" है। वहां सुधा दीदी बैठकर काम करती हैं। मैं उनके पास जाता था। वह अपना काम करते-करते मुझे नई-नई चीजें बताती थी। पहले उन्होंने मुझे रंग दिये और मैंने कई चीजों को पेंट किया। मुझे मजा आया। फिर उन्होंने मुझे सब्जी के बीज दिये। बोने के लिए। समस्या यह थी कि मेरी रुचि सब्जी लगाने में है पर मेरे पास छोटा सा खेत नहीं था। दीदी ने अपने ऑफिस के सामने मेरे लिए छोटा सा बगीचा खुदवाया और फिर मैंने कुछ सब्जियां बोई।

मैं अपनी सब्जी की पहली तुड़ाई भगवान को चढ़ाता हूँ। फिर उसे गाय को खिला देता हूँ। मैंने देखा मेरी सब्जी बहुत लगी। दीदी ने कहा कि यह मेरी अच्छी बात है। प्रकृति से लेने से पहले नमन करके देना भी आना चाहिए। हमें यह सीखना चाहिए।

आपने अपने खेत में कुछ डाला था?

हाँ, मैं गोबर की खाद डालता था। दीदी ने मुझे तीन तरह की खाद बनाना सिखाया। जैसे संतरे के छिलके, केले के छिलके से। बहुत आसान थी। वह भी मैंने खेत में डाली। मैं लकड़ियों व पत्तों की राख भी डालता था। जैसे कि पौधों में कीड़ा ना लगे। मैं गोबर के उपले बनाकर पौधों को धुंआ देता था। मैंने अपनी नानी के यहां देखा था।

अपना बगीचा बनाना, सब्जी फूल लगाना आपको कैसा लगता है? क्यों?

मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं अपनी सब्जियों में लगे फूलों व फलों को निहारता हूँ। फूल लगने पर बहुत खुशी होती है। कि अब फल आएंगे और मेरी मेहनत सफल होगी। यह सोचकर अच्छा लगा। देखभाल करना, पानी देना, निराई करना और फिर तुड़ाई। मेरी रुचि है। मैं फिर बांटता भी हूँ।

नाम : वंश वर्मा
कक्षा : 6
स्कूल : G.U.P.S., मियांवाला देहरादून

इस दौरान कुछ गलतियां भी हुई तुमसे। क्या सीखा तुमने?

हाँ हुई थी। दीदी ने मुझे समझाया था। मैंने सीखा कि हमें दूसरे के खेत से सब्जी व फल, फूल नहीं तोड़ने चाहिए। मानि दूसरे की मेहनत को खराब नहीं करना चाहिए। क्योंकि जब मेरे पौधे को कोई उखाड़ता है तो मुझे बहुत बुरा लगता है।

आपने घर में कुछ लगाया है?

हां। मैंने प्लास्टिक की बेकर बोतल व डब्बों से गमले बनाकर उनमें फूल लगाये। व मिर्ची, धनिया भी। दीदी के यहां देखा था मैंने।

कविता

प्लास्टिक प्रदूषण

जल, थल, वायु, आकाश ।
सब हो रहा है धीरे-धीरे प्रदूषित,
पर्यावरण में घोल रहा है जहर प्लास्टिक ।
जीवन की सांसो को रोक रहा है प्लास्टिक,

अभी तो आ रहा है प्लास्टिक यूज करने में मजा,
कहीं बन ना जाए ये जिंदगी भर की सजा ।
बन बैठा है ये पृथ्वी का राजा,
पृथ्वी का घुट रहा है ये गला ।

खाने में प्लास्टिक, पानी में प्लास्टिक,
हर वस्तु का नया रूप हो गया है प्लास्टिक ।
बीमारियों की नई फैक्ट्री है प्लास्टिक,
मौत का सुंदर समान है प्लास्टिक ।

अब तो जागो करो बहिष्कार,
करो पर्यावरण को प्लास्टिक मुक्त ।
नहीं तो प्लास्टिक से होगा जीना दुश्वार,
अब करना होगा इसका संहार ।

★ मानसी भण्डारी
कक्षा-8, रा॰ पू॰ मा॰ वि॰
मियांवाला, देहरादून

बापू

बापू का था यह सपना,
स्वच्छ रहे भारत अपना ।
जन-जन को समझाना है,
स्वच्छ भारत बनाना है ।
पॉलीथीन को हटाएंगे,
स्वच्छ भारत बनाएंगे ।

★ साचिन पाल, कक्षा-8,
रा॰ आ॰ इ॰ का॰ नागथात, कालसी,
दे॰ दून

चुटकुले

① लड़का : तुम लड़कियाँ इतनी सुंदर क्यों होती हो ?
लड़की : क्योंकि भगवान ने हमें खुद अपने हाथों से बनाया है ।
लड़का : कह तो ऐसे रही हो, जैसे हमें तो ठेके के मजदूरों से बनवाया ।

② गट्टू : पापा-पापा कल हम बहुत अमीर बननेवाले हैं ।
पापा : वो कैसे बेटा ?
गट्टू : कल मेरे गणित के टीचर हमें पैसों के रुपये बनाना सिखाएंगे ।

★ कु॰ मुस्कान, कक्षा-8
बाल संगठन सिल्ला,
नागथात, उत्तराखण्ड

मेरा गाँव

मेरे गाँव का नाम सिल्ला है। मेरा गाँव बहुत बड़ा है। मेरे गाँव में पूरे 21 मकान हैं। मेरे गाँव में बहुत पेड़-पौधे हैं और चारों तरफ हरियाली है। जिसके कारण मेरा गांव और भी सुंदर दिखता है। मेरे गाँव का नाम पूरे जौनसार बावर में फैला है। मेरे गाँव में चारों तरफ खुशिया ही खुशिया हैं और एकता भी है। जिसे देख हमें बड़ी खुशी होती है। यहां मेला भी लगता है जैसे दशहरा, जागड़ा, बीसू, आदि। जागड़े में महासू देवता की पालकी निकलती है। मेरे गांव में पॉलीथीन भी हटाई गई और महीने में 2 व 3 बार गांव की सफाई होती है।

★ साचिन पाल, कक्षा-8,
रा॰ इ॰ का॰, नागथात, कालसी, दे॰ दून

BOOK POST CONTAINING PERIODICALS
हिमालयी बच्चों का अखबार
RNI NO. UTTHIN/2003/10745
सेवा में,
....
....
....
....
....

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक डॉ अनिल प्रकाश जोशी द्वारा शिखर इन्टरप्राइजेज सत्यभामा निवास, तरूण विहार देहरादून मोबाइलः 9412007313 से मुद्रित तथा हैस्को ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.–अम्बीवाला, वाया प्रेमनगर, देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक : डा. सुधा कबटियाल
पता : डा. सुधा कबटियाल
ग्राम–मियांवाला, पो.ऑ.–हर्रावाला,
देहरादून–248001

सहयोग टीम : समस्त बच्चे

हमारा पता : बच्चों का अखबार
हैस्को गाँव
ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.–अम्बीवाला,
वाया प्रेमनगर, देहरादून–248001

सीमित प्रचार प्रसार हेतु

भारतीय वन्यजीव संस्थान Wildlife Institute of India
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन National Mission for Clean Ganga

साभार – गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एवं पारिस्थितिकीय सेवाओं के रख-रखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन द्वारा उत्प्रेरित एवं सहयोग।
HESCO